घनानंद का व्यक्तित्व

प्रफेसर-रौशन कुमार(हिन्दी विभाग)

जनता कोशी महाविद्यालय बिरौल

हिन्दी प्रतिष्ठा ।।।

घनानंद रीतिमुक्त धारा के श्रृंगारिक कवि हैं। इनका जन्म 1689 और मृत्यु नादिरशाह के आक्रमण के समय 1739 ईस्वी में हुई। यह दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह के यहां मीर

मुंशी थे और जाति के कायस्थ थे ।यह सुजान नामक वेश्या से प्रेम करते थे। एक दिन दरबार के कुचक्रियों ने बादशाह से कहा कि मीर मुंशी साहब गाते बहुत अच्छा है। जब बादशाह ने इन्हें गाना सुनाने को कहा तो यह टालमटोल करने लगे तब लोगों ने कहा कि यह इस तरह न गाएंगे यदि इनकी प्रेमिका सुजान कहे तब गाएंगे वेश्या बुलाई गई और तब घनानंद ने उसकी ओर मुंह करके और बादशाह की ओर पीठ करके गाना सुनाया। बादशाह इनके गाने पर तो प्रसन्न हुआ किंतु इनकी बेअदबी पर इतना नाराज हुआ कि उसने इन्हें शहर से बाहर निकल जाने को कहा जब इन्होंने अपने साथ सुजान को चलने को कहा तो उसने इंकार कर दिया इस तरह उन्हें वैश्या से वैराग्य उत्पन्न हो गया और बृंदावन आकर निंबार्क संप्रदाय के वैष्णव हो गए ।साह के आक्रमण के समय हुए कत्लेआम में मारे गए ।लोगों ने सैनिकों

से कहा कि वृंदावन में बादशाह का मीर मुंशी रहता है उसके पास बहुत सामान होगा सिपाहियों ने इन्हें जा घेरा और उनसे जर जर जरअर्थात धन धन धन कहा तो इन्होंने शब्द को उलट कर रज रज रज कह कर तीन मुठ्ठी धूल उन पर फेक दी सैनिकों ने क्रोध से इनका हाथ काट डाला और इनकी मृत्यु हो गई। धनानंद की कविता में सुजान शब्द का बारंबार प्रयोग हुआ है जो कहीं भी कृष्णवाची है तो कहीं सुजान नाम उस वेश्या के लिए है जो इन की प्रेयसी थी। घनानंद के लिखे 5 ग्रंथों का पता चलता है एक सुजान सागर, विरहलीला , लोकसार ,रसकेल्लीवली और कृपाकांड आचार्य शुक्ल के अनुसार इनके अतिरिक्त इनके कविताओं और सवैये के संग्रह भी मिलते हैं जिसमें 150 से लेकर 400 तक छंद.संकलित हैं उपलब्ध है। पदों की संख्या धन्य है ।घनानंद के विषय में अन्य उल्लेखनीय तथ्य

इस प्रकार हैं

1 प्रेम मार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथक तथा जवानदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कभी नहीं हुआ

2 भाषा पर जैसा अधिकार धनानंद को था वैसा और किसी कवि का नहीं।

3 घनानंद उन विरले कवियों में है जो भाषा की लाक्षणिक पदावली की शक्ति से परिचित हैं ।आचार्य शुक्ल के अनुसार भाषा के लक्षण एवं व्यंजन की सीमा कहां तक है इसकी पूरी परख इन्हीं को थी.।